

## ॥ गीतगोविन्दम् ॥

### ॥ श्री-जयदेव ध्यानम् ॥

श्रीगोपालविलासिनी वलयसद्रत्नादिमुग्धाकृति  
 श्रीराधापतिपादपद्मभजनानन्दाब्धिमग्नोऽनिशम्।  
 लोके सत्कविराजराज इति यः ख्यातो दयाम्भोनिधिः  
 तं वन्दे जयदेवसद्गुरुमहं पद्मावतीवल्लभम्॥  
 प्रलयपयोधिजले केशव धृतवानसि वेदम्।  
 विहितवहित्रचरित्रमखेदम्॥  
 केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥ १ ॥  
 क्षितिरतिविपुलतरे केशव तव तिष्ठति पृष्ठे।  
 धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे॥  
 केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥ २ ॥  
 वसति दशनशिखरे केशव धरणी तव लग्ना।  
 शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना॥  
 केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥ ३ ॥  
 तव करकमलवरे केशव नखमद्भुतशृङ्गम्।  
 दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम्॥  
 केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥ ४ ॥  
 छलयसि विक्रमणे केशव बलिमद्भुतवामन।  
 पदनखनीरजनितजनपावन॥

केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥

क्षत्रियरुधिरमये केशव जगदपगतपापम्।

स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ॥

केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥

वितरसि दिक्षु रणे केशव दिक्पतिकमनीयम्।

दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ॥

केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥

वहसि वपुषि विशदे केशव वसनं जलदाभम्।

हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ॥

केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥

निन्दसि यज्ञविधेः केशव अहह श्रुतिजातम्।

सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥

केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥

स्नेच्छनिवहनिधने केशव कलयसि करवालम्।

धूमकेतुमिव किमपि करालम् ॥

केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥ १० ॥

श्रीजयदेवकवेः केशव इदमुदितमुदारम्।

शृणु शुभदं सुखदं भवसारम् ॥

केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्विभ्रते  
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।  
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते  
स्नेच्छान्मूर्च्छयते दशकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥  
॥ इति श्री-जयदेवविरचितं दशावतार-गीतगोविन्दं सम्पूर्णम् ॥

---

This stotra can be accessed in multiple scripts at:  
[http://stotrasamhita.net/wiki/Gita\\_Govindam](http://stotrasamhita.net/wiki/Gita_Govindam).

 generated on **November 15, 2025**

Downloaded from  <http://stotrasamhita.github.io> |  StotraSamhita | Credits